वैश्वीकरण के दौर में काशी की रामलीला का सामाजिक महत्व : एक समाजशास्त्रीय दृष्टि

डॉ0 विमल कुमार लहरी*

सारांश

काशी की रामलीला, रामलीला नहीं वरन् एक विचार है, जो अनादिकाल से भारतीय समाज में विद्यमान है। रामलीला रूपी यह विचार आज उत्तर आधुनिकता के दौर में भी सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती प्रदान कर रहा है। कहने के लिए रामलीला हिन्दू धार्मिक महाकाव्यों में वर्णित भगवान राम एवं रावण के बीच संघर्ष को इंगित करता है लेकिन देखा जाय तो यह सिक्के का एक पक्ष है, जबकि सिक्के के दूसरे पक्ष को देखा जाय तो काशी की रामलीला जाति, धर्म एवं सम्प्रदायगत भेद की वैचारिकी को कम करते हुए कर्तव्यबोध के लिए प्रेरित करती है। साथ ही स्वस्थ मनोरंजन भी प्रदान करती है। आज उत्तर आधुनिकता के दौर में भी काशी की रामलीला का सामाजिक महत्वबड़े स्तर पर विद्यमान है।

समस्या कथन

आज मानव सभ्यता अपनी विकास यात्रा को पार करते हुए उत्तर आधुनिकता के मुहान पर खड़ी है। इस विकास यात्रा में मानव कई पड़ावों से होकर गुजरा। मानव की प्रारम्भिक अवस्था आज जाति, प्रजाति, धर्म एवं सम्प्रदायगत खेमे में बँट चुकी है। सबकी अलग–अलग जीवन संस्कृति है, अलग–अलग मनोरंजन के साधन हैं। आज मानव की परम्परागत गीत–संगीत की विकास यात्रा पाश्चात्य संगीत के पड़ाव तक पहुँच चुकी है, जहाँ मानव समाज अलग–अलग खेमों में बँटता दिखाई पड़ता है। लेकिन मानव समाज के बँटते इन खेमों को काशी की रामलीला एक खेमे के रूप में परिवर्तित कर रही है, जिससे जाति, प्रजाति, धर्म एवं सम्प्रदायगत भेद की बेड़ियाँ कमजोर पड़ी हैं। अस्तु यह पक्ष गवेषणा का विषय है। प्रस्तुत शोध–पत्र को पूर्ण करने के लिए काशी की रामलीला के पात्रों के साथ–साथ काशी की रामलीला को देखने वालों को उत्तरदाताओं के रूप में चयनित किया गया है। साक्षात्कार के उपरान्त प्राप्त तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत शोध–पत्र को पूर्ण किया गया है।

अवधारणात्मक व्याख्या

प्रस्तुत शोध–पत्र में दो महत्वपूर्ण अवधारणायें हैं– वैश्वीकरण एवं रामलीला। इन दोनों अवधारणाओं में क्रमवार विवेचना इस प्रकार है :

वैश्वीकरण

वैश्वीकरण का प्रयोग 1960 के दशक में समाज विज्ञान में देखने को मिलता है। लेकिन 1980 के दशक में 'वैश्वीकरण' शब्द का उपयोग अर्थशास्त्रियों द्वारा बड़े स्तर पर किया जा रहा है। वैश्वीकरण वैश्विक स्तर पर रूपान्तरण की वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व को एक समाज के रूप में देखा जाता है। वैश्वीकरण के संदर्भ में नोअम चोमस्की का कहना है कि वैश्विकरण शब्द का उपयोग आर्थिक वैश्वीकरण के नव उदार रूप का वर्णन करने में कया जाता है।

रामलीला

रामलीला भारत ही नहीं, वरन् विश्व के स्तर पर एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। परन्तु इसके उत्पत्ति एवं उद्भव के संदर्भ में अभी भी इस पर विवाद बना हुआ है। इसके तथ्यपरक प्रमाण नहीं मिलते हैं। इस संदर्भ में एक कहानी है कि रामचन्द्र 14 बर्ष बनवास के दौरान राम की लीलाओं पर आधारित रामलीला को माना जाता है।

रामलीला : अवधारणात्मक विवेचना

रामलीला भारत ही नहीं, वरन् विश्व के स्तर पर एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है लेकिन इसके उत्पत्ति एवं प्रवर्तक के रूप में हम देखें तो अभी इस पर विवाद का प्रश्न बना हुआ है। इसके उद्भव के सन्दर्भ में आज भी तथ्यपरक प्रमाण नहीं मिलते हैं। इस संदर्भ में एक किवदंती है कि त्रेता युग में श्री रामचन्द्र के चौदह वर्ष वनवास के दौरान वन में राम की लीलाओं पर आधारित घटनाओं को

* असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

रामलीला के रूप में संज्ञा प्राप्त है। इसके अन्तर्गत देखा जाय तो जिस तरह राम वन को जाते हैं। उनके साथ उनकी पत्नी, भाई लक्ष्मण भी वन को जाते हैं लेकिन इसी बीच अनेक घटनाएँ घटती हैं जिसमें हम देखते हैं कि 'सीता का हरण' 'रावण और रामयुद्ध' इसके बीच भी अनेक इसमें पात्र आते हैं जो अपने किरदार को निभाते हैं। इस प्रकार हम देखें तो रामलीला की उत्पत्ति यही से मानी जाती है। लेकिन इस संदर्भ में प्रामाणिकता का दूसरा स्तम्भ है– तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस। इन्होंने ही सर्वप्रभम हिन्दी में रामलीला से सम्बन्धित साहित्य को उपलब्ध कराया। इनकी प्रेरणा के अनुसार माना जाता है कि प्रथम बार काशी में तुलसीघाट पर रामलीला हुई थी। इस तरह हम देखें तो रामलीला की स्रोत इन बिन्दुओं पर देखने को मिलते हैं। रामलीला में भगवान राम का जो वर्णन रामायण महाकाव्य में लिखा हुआ है या वर्णित है। उसी को रामलीला के के रूप में हूबहु प्रदर्शित किया जाता है। रामलीला का मंचन पूरे उत्तर भारत में प्रत्येक वर्ष पारंपरिक समयावधि के अनुसार सितम्बर और अक्टूबर माह के दौरान होता है। रामलीला के प्रमुख स्थानों के रूप में अयोध्या, रामनगर, बनास, वृन्दावन, अल्मोड़ा, सतना और मधुबनी मान्यता प्राप्त है। वस्तुतः रामलीला में रामायण का स्वरूप पूरी की पूरी तरह से रामचरितमानस पर आधारित है जो कि उत्तर भारत में कथा कहने का एक बहुत प्रचलित माध्यम है। दशहरा के दौरान भारत के हर लगभग सभी गाँवों में अधिकांश शहारों में भगवान राम की वनवास से अयोध्या आने तक का चरित्र चित्रण नाटकों के माध्यम से चित्रित किया जाता है। लेकिन देखा जाय तो यह नाटक ही नहीं वरन् एक विचार है। क्योंकि रामलीला प्रेमी जाति, धर्म, सम्प्रदायगत आधारित दूरियों को भुलाकर रामलीला देखने जाते हैं। एक साथ बैठते है और एक ही साथ रामलीला को देखते हैं जिससे सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती मिलती है। अस्तु यह पक्ष महत्वपूर्ण है।

रामलीला के संदर्भ में हम देखें तो रामलीला का मंचन सिर्फ भारत में ही नहीं किया जाता है, वरन् विश्व के के अनेक देशों में भी इसका मंचन किया जाता है। वस्तुतः यह भारतीयों की जनसंख्या पर आधारित होता है। जिस देश में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है। वह अवश्य रामलीला का मंचन होता है। इस तरह हम देखें तो रामलीला एशिया के विभिन्न देशों में अनेक–अनेक नामों से प्रचलित है और इसका मंचन किया जाता है।

यदि विश्व की प्रथम रामलीला के संदर्भ में हम देखें तो माना जाता है कि महाकवि तुलसी दास जी सांसारिक बंधन से विरक्त होकर वैराग्य धारण कर राम के धार्मिक स्थलों का भ्रमण करने निकल पड़े और पूजापाठ, ध्यान धर्म, आराधना आदि में लीन होकर उन्होंने रामचरित मानस की रचना की।

रामलीला के प्रकार

वीकिपीडिया में संदर्भित है कि रामलीला के मुख्यतः तीन प्रकार होते हैं : 1. सचल लीलाएँ, 2. अचल लीलाएँ, 3. मंचन लीलाएँ। काशी में मुख्यतः चारों स्थानों पर अचल लीलाएँ ही होती हैं। तुलसीदास द्वारा स्थापित रंगमंच की कई विशेषताओं में एक यह भी विशेषता है कि मनोहरता की दृष्टि से श्रद्धाजनकपूर्ण चित्रकूट लंका आदि अलग–अलग स्थान बना दिए गए है और एक स्थान पर उससे सम्बन्धित सब लीलाएँ दिखाई जाती हैं।

रामलीला के कलाकार अथवा अभिनयकर्ता

प्रस्तुत शोध–पत्र के पूर्व में ही कहा गया है कि यह जातिगत, धर्मगत भेद को कम करती है। आज भारत में जितनी भी लीलाएँ होती हैं। प्रत्येक स्थानों पर उसमें जाति, धर्म की वैचारिकी से परे लीलाएँ होती हैं। कहने का तात्पर्य है कि इसमें जो भी कलाकार होते हैं। वे कलाकार जाति और धर्म के बन्धनों से परे होते हैं। इसमें दलित, हिन्दू, मुस्लिम अथवा अन्य जातियों के लोग भी भाग लेते हैं एवं पूरी निष्ठा के साथ अपने अभिनय का मंचन करते हैं। इस तरह देखा जाय तो ये रामलीला के कलाकार सामाजिक समरसता को बढ़ाने में भूमिका अदा कर रहे हैं।

रामलीला के प्रसिद्ध स्थल

रामलीला के प्रमुख स्थलों के रूप में हम देखें तो जेम्स प्रिंसेस ने अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि काशी की रामलीला रामनगर के काशी नरेश के समक्ष होती हैं और इसकी समाप्ति रावण के पुतले के दहन के साथ होती है। लोकनायक राम की लीला भारत के अनेक क्षेत्रों में होती है। वैसे देखा जाय तो भारत में रामलीला का प्रमुख स्थल काशी और अयोध्या है। इसी तरह दूसरे स्थान के रूप में हम देखें तो भारत में दिल्ली की रामलीला भी प्रमुख मानी जाती है। वैसे तो दिल्ली में रामलीला का इतिहास काफी पुराना है। परन्तु दिल्ली में जो पहली बार रामलीला हुई, वह बहादुरशाह जफर के समय पुरानी

दिल्ली के रामलीला मैदान में हुई थी। लवकुश रामलीला कमेटी, अशोक रामलीला कमेटी आदि दिल्ली की प्राचीन रामलीलाओं में से है। श्रीराम भारती कला केन्द्र द्वारा रामलीला का मंचल तीन घण्टों में दर्शाया जाता है। यहाँ की रामलीला में पात्रों की वेशभूषा भी दर्शनीय होती है। इसके अतिरिक्त दिलशाद गार्डेन की रामलीला मयूर ऋतु गार्डेन की रामलीला आदि प्रमुख चर्चित रामलीलाओं में से एक है।

पुस्तक समीक्षा

1. Anuradha Kapoor ने Actors, Piligrims, Kings & Guards: The Ramleela at Ramnagar शीर्षक से काम किया है। जो Seagull से 2006 में प्रकाशित है। पुस्तक में मुख्यतः रामलीला के विभिन्न पात्रों के साथ–साथ रामलीला में प्रयुक्त किये पुतले, मास्क, देवी–देवताओं, राक्षसों एवं बन्दरों का जीवन्त वर्ण किया गया है।
2. मोती चन्द ने ''काशी का इतिहास'' शीर्षक से काम किया है जो विश्वविद्यालय प्रकाशन से 2003 में (तृतीय संस्करण) प्रकाशित है। प्रस्तुत पुस्तक में काशी के इतिहास के साथ–साथ, काशी के रामलीला का जीवन्त वर्णन किया है।
3. बनमाली ने "The Song of Rama: Vision of Ramayan" शीर्षक से काम किया है जो ब्लू डव प्रेस 2001 में प्रकाशित है। यह पुस्तक रामायण के गीतों पर तथ्यपरक प्रकाश डालती है।
4. इसके अलावा उपर्युक्त काशी की रामलीला पर अनेकों शोध–पत्र एवं पुस्तकें उपलब्ध हैं, परन्तु शोध–पत्र की शब्द सीमा को देखते हुए यहाँ बस उनका उल्लेखित किया जा रहा है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. काशी की रामलीला की विकास यात्रा का विश्लेषण करना।
2. काशी की रामलीला के विविध पहलुओं का जैसे– सामाजिक एवं धार्मिक सम्बन्ध की खोज करना।
3. भारतीय जनमानस पर रामलीला के प्रभावों का अध्ययन करना।
4. उत्तर आधुनिकता के दौर में काशी की रामलीला की सार्थकता का अध्ययन करना।
5. कर्तव्यबोध के रूप में रामलीला का अध्ययन करना।
4. मानसिक शांति एवं आध्यात्मिक विचारों के उन्नयन में काशी की रामलीला को एक अभिकरण के रूप में देखना।
5. काशी की रामलीला के दौरान पारस्परिक समन्वय की खोज करना।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र के रूप में काशी को चुना गया है क्योंकि काशी की रामलीला भारत ही नहीं, वरन् विश्व में प्रसिद्ध है।

समग्र एवं न्यायदर्श का चयन

काशी की रामलीला में भाग लेने वालों की संख्या का सही एवं सटीक बताना तो दुरूह कार्य है लेकिन पायलट सर्वेक्षण से अनुसंधानकर्ता को स्पष्ट हुआ कि कई हजारों से अधिक की जनसंख्या में लोग काशी की रामलीला में सम्मिलित होते हैं। इसी संख्या में से उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से आयु एवं लैंगिक स्थिति के आधार पर 50 लोगों को उत्तरदाताओं के रूप में चुना गया। इन्हीं से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत शोध–पत्र को पूर्ण किया गया है।

तथ्य संकलन के स्रोत

प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों से तथ्य संकलित किये गये हैं।

तथ्य संकलन की विधि

साक्षात्कार–अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों को संकलित किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों के संकलन हेतु उपकरण के रूप में साक्षात्कार–अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का वर्गीकरण करके उसे सारणीबद्ध किया गया है एवं सारणी के तथ्यों के विश्लेषण से निष्कर्ष देने का प्रयास किया गया है। अस्तु प्रस्तुत शोध–पत्र में

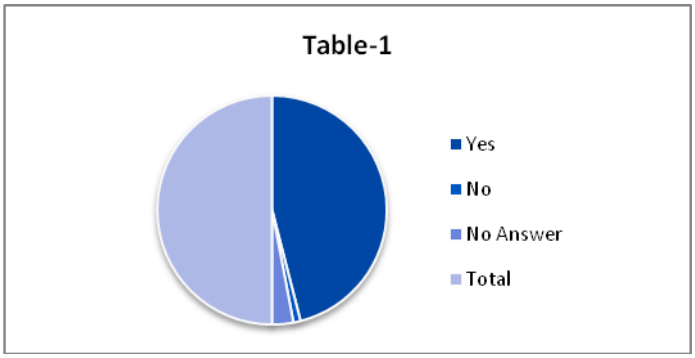
सारणीवार तथ्यों की विवेचना निष्कर्ष सहित इस प्रकार है :

सामाजिक समरसता एवं काशी की रामलीला

सामाजिक समरसता से ही समाज में एक सुव्यस्थित व्यवस्था कायम रहती है। काशी की रामलीला देखने के लिए विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग आते हैं। एक साथ लोग मिलकर काशी की रामलीला देखते हैं। इससे कहीं न कहीं सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलता है। व्यावहारिक धरातल पर इसकी क्या स्थिति है? इसी पक्ष का तथ्यपरक विश्लेषण अधोलिखित सारणी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है :

Table-1

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	46	91
No	01	02
No Answer	03	06
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी में वर्णित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 91.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि काशी की रामलीला सामाजिक समरसता बढ़ाने में योगदान देती है। 02.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि काशी की रामलीला से समरसता नहीं बढ़ती है। शेष 06.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सन्दर्भ में कोई उत्तर नहीं दिया।

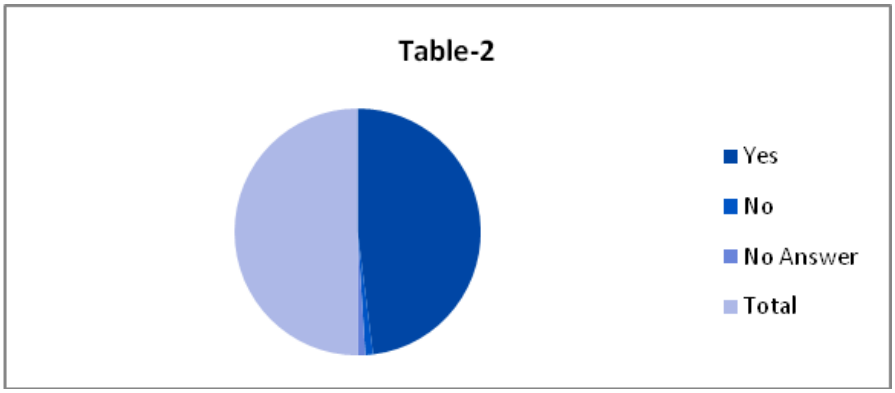
अतः स्पष्ट है कि सर्वाधिक 91.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि काशी की रामलीला देखने से लोगों के बीच सामाजिक समरसता बढ़ती है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि समाज में सामाजिक समरसता बढ़ाने में काशी की रामलीला एक अभिकरण के रूप में दृष्टिगत है।

काशी की रामलीला एवं मानसिक शांति

मानव सभ्यता की विकास यात्रा आज उत्तर आधुनिकता के मुहान पर खड़ी है। मानव ने अपने सुख सुविधाओं हेतु ढेर सारे आविष्कारों एवं यंत्रों को जन्म दिया। परिणामस्वरुप मानव पूर्णतः मशीनीकृत हो गया है। भौतिक संसाधनों में ही मानव शांति को तलाश रहा है। लेकिन कहीं न कहीं वह शांति से कोसों दूर है। आज वैज्ञानिक युग में भी काशी की रामलीला मानव को मानसिक शांति प्रदान कर रही है। इसी पक्ष का तथ्यपरक विश्लेषण अधोलिखित सारणी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है :

Table-2

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	48	96
No	01	02
No Answer	01	02
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी में वर्णित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 96.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि काशी की रामलीला देखने से मन को शांति मिलती है। जबकि 02.00 प्रतिशत उत्तरदाता ने स्वीकार किया कि मन को शांति नहीं मिलती, बल्कि पर्यटन की दृष्टिकोण से काशी की रामलीला देखते हैं। शेष 02.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संदर्भ में कोई उत्तर नहीं दिया।

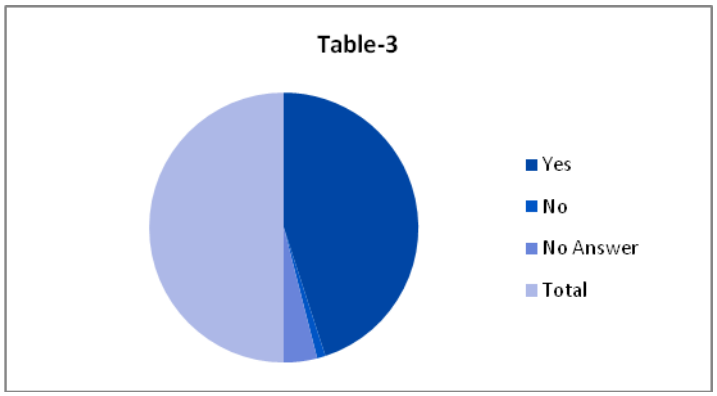
अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 96.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि काशी की रामलीला देखने से मन को शांति मिलती है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि आज उत्तर आधुनिकता के दौर में भी काशी की रामलीला का सामाजिक माहत्य बना हुआ है।

अवसाद, तनाव, अप्रसन्नता एवं विभिन्न व्याधियों को दूर करने में काशी की रामलीला का योगदान

आज मानव आधुनिकता के समस्त संसाधनों से परिपूर्ण है। उसके बावजूद भी अवसाद, तनाव एवं अप्रसन्नता का स्तर दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। इस सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से पूछा गया कि क्या अवसाद, तनाव, अप्रसन्नता एवं विभिन्न व्याधियों को दूर करने में काशी की रामलीला सहायक है? इस सन्दर्भ में जो तथ्य प्राप्त हुए उसका तथ्यपरक विश्लेषण अधोलिखित सारणी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है :

Table-3

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	45	90
No	01	02
No Answer	04	08
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी में वर्णित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 90.00 प्रतिशत उत्तरदाता इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि काशी की रामलीला में सम्मिलित होने से मन प्रसन्न एवं तनावरहित होता है। साथ ही साथ मन प्रसन्न रहने से विभिन्न व्याधियाँ भी नहीं होती हैं अथवा दूर होती हैं। जबकि नकारात्मक उत्तर मात्र 02.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ही दिया। शेष 08.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संदर्भ में कोई उत्तर नहीं दिया।

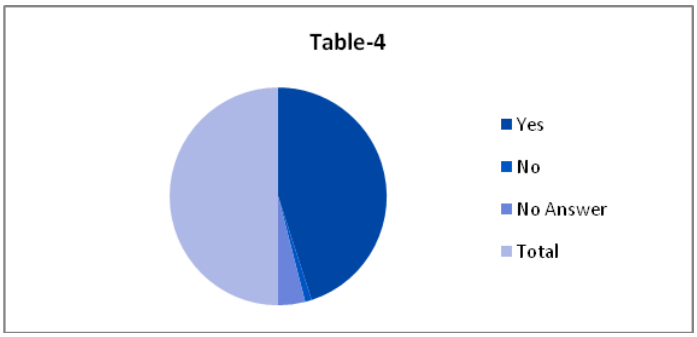
अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 90.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि काशी की रामलीलामें सहभागी होने से मन प्रसन्न, तनावरहित एवं ऊर्जा से पोषित होता है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि आज लोग अवसाद, तनाव एवं विभिन्न व्याधियों से दूर रहने के लिए आध्यात्म की ओर अग्रसर हो रहे हैं। आज उत्तर आधुनिक युग में भी अवसाद, तनाव, अप्रसन्नता एवं विभिन्न व्याधियों को दूर करने में काशी की रामलीला रामलीला एक विकल्प के रूप में विद्यमान हैं।

सामाजिक सम्बन्धों में मजबूती

प्रस्तुत शोध–पत्र के कई जगहों पर रामलीला को एक विचार के रूप में भी इंगित गया है। विचार सकारात्मक हो, गहनीय हो, महनीय हो, तो वे सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध–पत्रों को पूरा करने के लिए मैंने काशी की अधिकांश रामलीलाओं का भ्रमण किया। रामलीलाओं में भागीदार हुआ, जिसके बाद यहाँ मैं देखता हूँ कि जितने भी दर्शक हैं, वे जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। ये लोग एक साथ बैठकर के लीला को देखते हैं। इस तरह हम देखें तो सामाजिक सम्बन्धों को इससे बड़े स्तर पर मजबूती मिलती है। मैकाइवर एवं पेज कहता है कि जब तक व्यक्ति के बीच अन्तःक्रियाएँ नहीं होती तो वहाँ सामाजिक सम्बन्ध विकसित नहीं होता। अर्थात् वह एक स्थूल स्थिति में ही बने रहेंगे। लेकिन रामलीला के माध्यम से अन्तःक्रियाएँ होती हैं, जिससे सामाजिक सम्बन्धों को बड़े स्तर पर मजबूती मिलती है। इसी पक्ष को जानने के लिए हमने रामलीला प्रेमियों, रामलीला दर्शकों से साक्षात्कार लिया। साक्षात्कार के बाद जो तथ्य प्राप्त हुए इस सन्दर्भ में उसका विश्लेषण इस प्रकार है :

Table-4

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	45	90
No	01	02
No Answer	04	08
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 90.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि काशी की रामलीला सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती प्रदान करती है, जबकि 02.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संदर्भ में नकारात्मक उत्तर दिया। शेष 10.00 प्रतिशत उत्तरदाता यह समझ नहीं पाये कि इसका तात्पर्य क्या है? इस नाते उन्होंने इस संदर्भ में कोई उत्तर नहीं दिया।

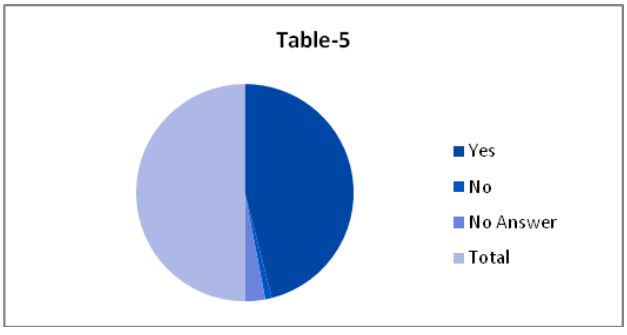
इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 90.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि रामलीला के द्वारा सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती प्रदान होती है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि जहाँ सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती देने के लिए अनेक अभिकरण उत्तरदायी हैं, जिनमें रामलीला को भी एक अभिकरण के रूप में देखा जा सकता है।

धर्म, सम्प्रदाय एवं जातिगत भेद में कमी

भारतीय समाज को हम देखें तो भारतीय समाज को एक रंगी साड़ी के रूप मे नहीं, बल्कि बहुरंगी चुनरी के रूप में मान्यता प्राप्त है। अर्थात् यहाँ विभिन्न जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय के लोग एक साथ रहते हैं। एक साथ जीवन यापन करते हैं। एक साथ अपने जीवन को गति देते हैं। उनकी अपनी अलग संस्कृति है। अलग जीवन प्रत्याशा ही अलग रहन–सहन के ढंग को प्रदर्शित करता है लेकिन हम रामलीला के संदर्भ में देखें तो साक्षात्कार के दौरान लोगों ने स्वीकार किया कि यहाँ जाति, धर्म और सम्प्रदाय भेद को भुलाकर सभी लीला प्रेमी एक साथ बैठते हैं और लीला को देखते हैं। यहाँ न जाति का स्वरूप है, ना ही धर्मगत भेद की भावना है। सिर्फ है तो वह एक समान भाईचारा है। इसी पक्षों को और मजबूती अधोलिखित सारणी प्रदान करती है।

Table-5

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	46	92
No	01	02
No Answer	03	06
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी में वर्गीकृत तथ्यों से स्पष्ट है कि 92.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि रामलीला के माध्यम से भारत में जातिगत, धर्म, सम्प्रदाय भेद में कमी आती है, जबकि 02.00 प्रतिशत ने इस संदर्भ में नकारात्मक उत्तर दिया। शेष 06.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संदर्भ में इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

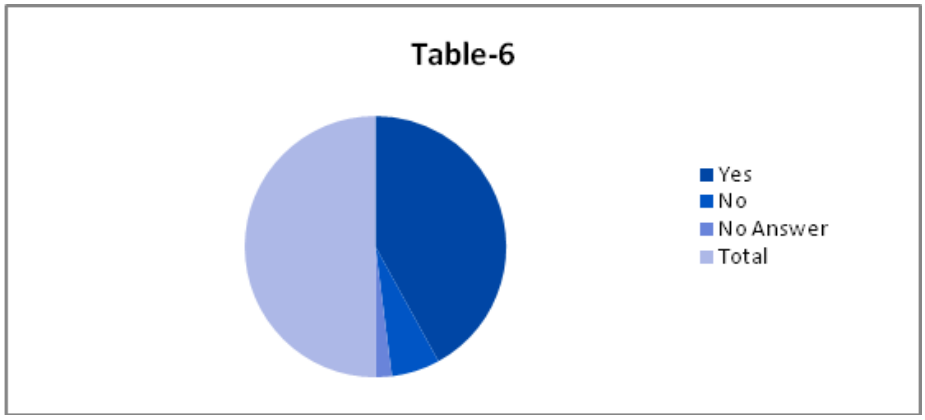
अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि सर्वाधिक 92.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि काशी की रामलीला जाति, धर्म और सम्प्रदायगत भेद में कमी करती है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि जहाँ हम जाति, धर्म और सम्प्रदायगत भेद को कम करने के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं। वहीं वैयक्तिक प्रयासों के रूप में रामलीला का महत्वपूर्ण महात्य है।

भारतीय संस्कृति का संरक्षण

भारतीय संस्कृति का इतिहास पुरातन रहा है। और भारतीय संस्कृति के संरक्षण से ही हम इस परंपरागत चीजों को देख पा रहे हैं। कैसे ये परम्परागत साधन हमें मजबूती प्रदान करते हैं। हमें सुरक्षा प्रदान करते है, हमारे मन को प्रसन्न रखते हैं। ऐसी स्थिति में हमारा भी दायित्व बनता है कि हम अपनी संस्कृति को संरक्षित कर पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तानान्तरित करें। आज रामलीला के माध्यम से से भी हम देखें तो हम इस पुरातन संस्कृति का संरक्षण किया जा रहा है। इसी पक्ष के संदर्भ में उत्तरदाताओं से जो बात की गई। उसका तथ्यपरक विश्लेषण अधोलिखित सारणी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है:

Table-6

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	42	84
No	06	12
No Answer	02	04
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी में वर्गीकृत तथ्यों से स्पष्ट है कि 84.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि रामलीला के माध्यम से भारतीय संस्कृति के संरक्षण को मजबूती मिली है। जबकि 12.00 प्रतिशत ने इस संदर्भ में नकारात्मक उत्तर दिया। शेष 04.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संदर्भ में इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि सर्वाधिक 84.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि काशी की रामलीला के द्वारा भारतीय संस्कृति के संरक्षण को मजबूती मिली है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि भारतीय संस्कृति को समृद्ध एवं मजबूत बनाने में रामलीला की भूमिका महत्वपूर्ण है।

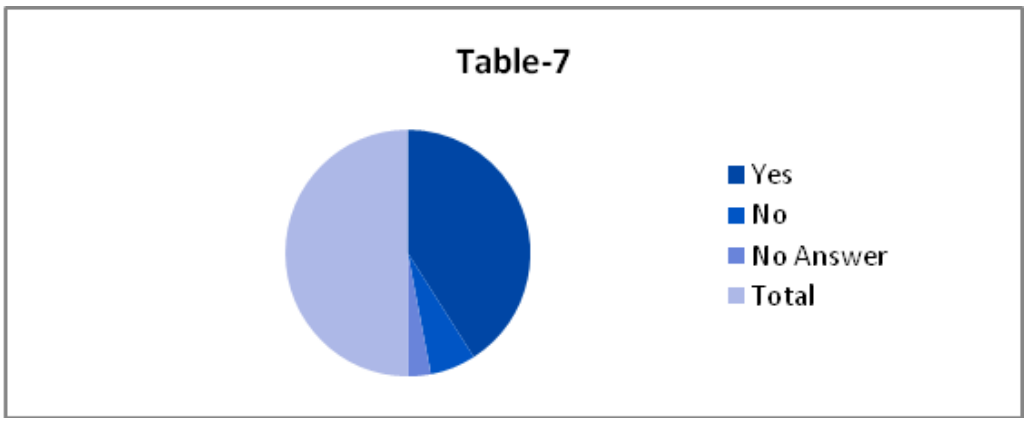
उत्तर आधुनिकता के दौर में रामलीला की सार्थकता

आज मानव सभ्यता अपने अरण्य अवस्था को पार करते हुए उत्तर आधुनिकता के मुहान पर

खड़ी है। जहाँ हमारे परंपरागत मूल्य कमजोर हुए हैं। आज यहाँ लोग शांति की तलाश बड़े–बड़े होटलों, 5 स्टार होटलों, पर्यटक स्थलों पर कर रहे हैं। लेकिन इधर कुछ दशक से हम देखें तो जनसंख्या का एक बड़ा तबका शांति की तलाश इन प्राचीन संस्कृतियों के खोजने लगा है। जिसके कारण मठों, मंदिरों, आश्रमों में आज युवाओं की संख्या बड़े स्तरों पर बढ़ी है। यह एक जीवन्त कारण है कि आज इस ओर संख्या बढ़ी है। आज लोग परम्परागत साधनों से स्वस्थ मनोरंजन कर रहे हैं। रामलीला भी कहीं न कहीं उत्तर आधुनिकता के दौर में लोगों को शांति और सुकून प्रदान कर रही है। इसी पक्ष की पुष्टि के संदर्भ में उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिए गए। साक्षात्कार से जो तथ्य प्राप्त हुए उसका तथ्यपरक विश्लेषण अधोलिखित सारणी के माध्यम से से प्रस्तुत किया गया है :

Table-7

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	41	82
No	06	12
No Answer	03	06
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी में तथ्यों के आधार पर हम देखें तो 82.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि आज उत्तर आधुनिकता के दौर में भी रामलीला की सार्थकता बनी हुई है। जबकि 12.00 प्रतिशत उत्तरदाता ले इस संदर्भ में नकारात्मक उत्तर दिया है। शेष 06.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संदर्भ में कोई उत्तर नहीं दिया।

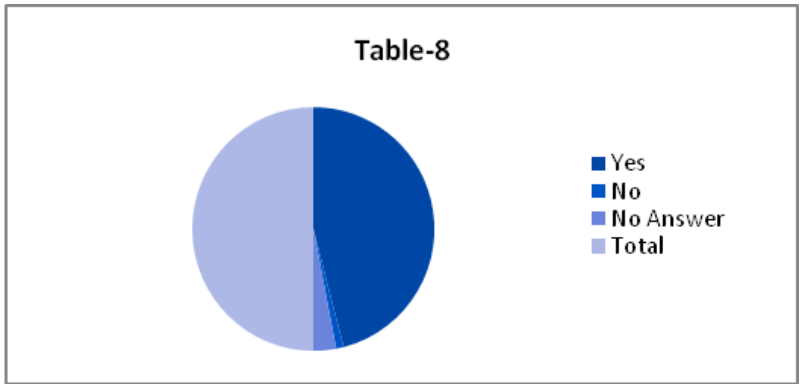
अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 82.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि आज उत्तर आधुनिकता के दौर में भी रामलीला की सार्थकता बनी हुई है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि परम्परा एवं आधुनिकता का समन्वय मानव को सुख, समृद्धि और विकास के पथ पर ले जा रहा है।

परम्परागत भारतीय मूल्यों की रक्षा

आज उत्तर आधुनिकता के दौर में परंपरागत मूल्य कुछ कमजोर पड़े हैं। लेकिन कहीं न कहीं ये मूल्य जीवन के उन गूढ़ रहस्यों में से है। जो जीवन को मजबूती से स्थापित करते हैं। आज परंपरागत भारतीय मूल्यों का उत्तर आधुनिकता के दौर में क्षरण हो रहा है। कहीं न कहीं इस क्षरण को रोकने में विभिन्न कारकों के साथ–साथ रामलीला भी महत्वपूर्ण कारकों में उत्तरदायी है। अस्तु इसी पक्ष को जानने के लिए उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिए गए। साक्षात्कार से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण अधोलिखित सारणी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है:

Table-8

Response	Respondence	
	Frequency	**Percentage**
Yes	46	92
No	01	02
No Answer	03	06
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी में चूंकि विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि 92.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि रामलीला से परम्परागत भारतीय मूल्यों की रक्षा को बड़े स्तर पर मजबूती मिली है, जबकि 02.00 प्रतिशत उत्तरदाता इस संदर्भ में नकारात्मक उत्तर दिए और 06.00 प्रतिशत उत्तरदाता कोई उत्तर नहीं दिए।

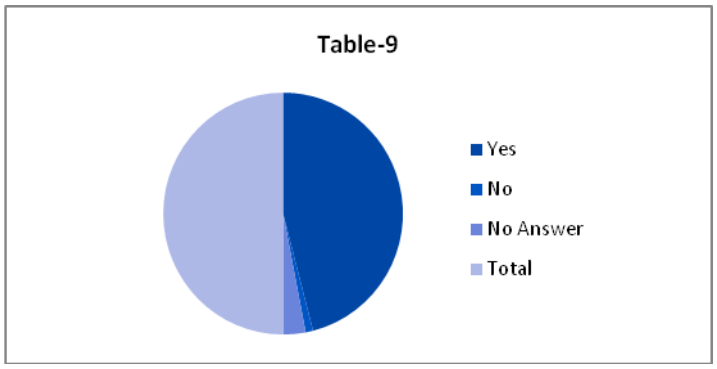
अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 92.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि रामलीला के माध्यम से परम्परागत मूल्यों को मजबूती मिली है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि जहाँ हम अपने परम्परागत मूल्यों की रक्षा के लिए अनेक प्रयत्न कर रहे हैं। उसमें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से रामलीला भी उन्हें संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

सामाजिकरण की प्रक्रिया में सहायक

सामाजिकरण मानव जीवन की एक ऐसी प्रक्रिया जो जन्म से लेकर मृत्यु के अन्तिम क्षण तक चलती रहती है। जब बच्चा पहली बार धरती पर कदम रखता है तो वह पूर्णतः जैविक अवस्था में होता है। लेकिन समाज में आने के बाद ही सामाजिकरण के माध्यम से वह एक सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होता है तो कहीं न कहीं उसे सामाजिक प्राणी के परिणित होने में अनेक कारक उत्तरदायी होते हैं और इन कारकों में हम देखें तो रामलीला की एक कारक के रूप में दृष्टिगोचर होती है। चूंकि रामलीला में उन पक्षों को दिखाया जाता है कि किस तरह से आप अपने दायित्वों को निर्वहन करें। इस पक्ष की प्रामाणिकता को और मजबूत करने के लिए उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिए। साक्षात्कार के बाद जो तथ्य प्राप्त हुए, उसका तथ्यपरक विश्लेषण अधोलिखित सारणी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है :

Table-9

Response	Respondence	
	Frequency	**Percentage**
Yes	46	92
No	01	02
No Answer	03	06
Total	**50**	**100**



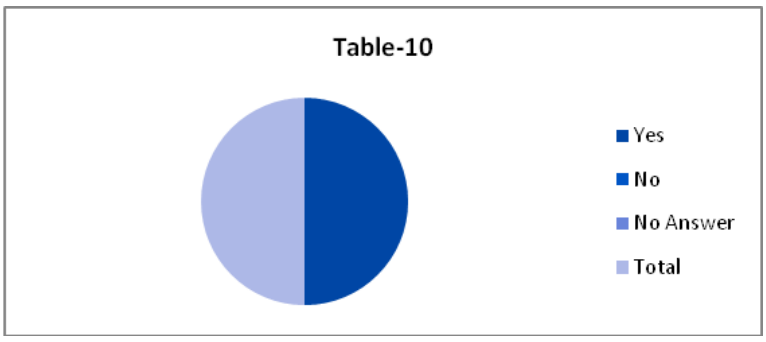
उपर्युक्त सारणी के विश्लेषण के आधार पर हम देखें तो 92.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि रामलीला के माध्यम से सामाजिकरण की प्रक्रिया को गति मिलती है। 02.00 प्रतिशत उत्तरदाता इस संदर्भ में नकारात्मक उत्तर दिए, जबकि शेष 06.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस संदर्भ में कोई उत्तर नहीं दिया। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 92.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि काशी की रामलीला से जनमानस के बीच सामाजिकरण की प्रक्रिया को बड़े स्तर पर गति मिलती है। अर्थात् सामाजिकरण की प्रक्रिया में रामलीला भी एक अभिकरण के रूप में सहायक हो रही है।

कर्तव्यबोध में सहायक

कर्तव्यबोध के संदर्भ में देखें तो हमें भारतीय वाड्यमयों में इसके अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। भारतीय वाड्यमयों में कहा गया है कि ''**धर्मो धारयति इति धर्माणा**'' अर्थात् जो धारण किया जाय वह धर्म है। कर्तव्य धारण किया जाता है। अतः कर्तव्य धर्म है। इस संदर्भ में हम देखें जानमानस का माता–पिता के प्रति कर्तव्य, गुरुजनों के प्रति कर्तव्य, दीन–हीनों के प्रति कर्तव्य, समाज के प्रति कर्तव्य, देश के प्रति कर्तव्य क्या है, यही धर्म है। अगर इसी कर्तव्य का पालन हम करते हैं तो धर्म का पालन करते हैं। यहाँ हम काशी की रामलीला के समस्त घटनाक्रमों का उल्लेख करें तो लगभग काशी की रामलीला के समस्त घटनाक्रमों में कर्तव्य बोध दृष्टिगोचर होते हैं और इसी कर्तव्य बोध की पृष्टि के संदर्भ में उत्तरदाताओं से साक्षात्कार लिया गया। साक्षात्कार के उपरान्त उसका तथ्यपरक विश्लेषण उपर्युक्त सारणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है :

Table-10

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	50	100
No	00	00
No Answer	00	00
Total	**50**	**100**



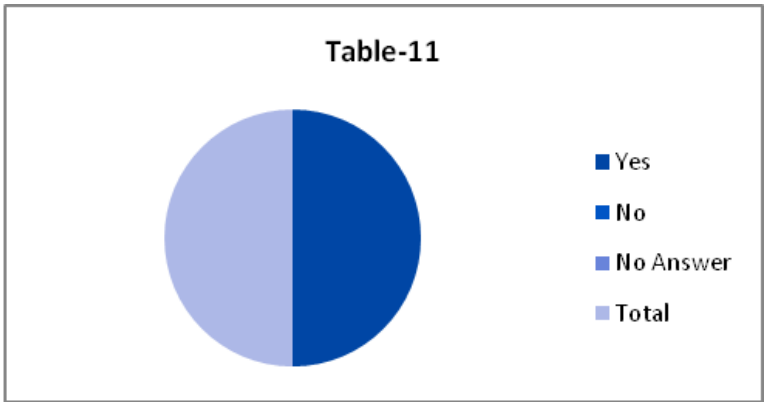
उपर्युक्त सारणी के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समस्त उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि रामलीला कर्तव्य बोध को ज्ञात कराती है। कर्तव्यबोध के लिए प्रेरित करती है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि यहाँ आज उत्तर आधुनिकता के दौर में व्यक्ति अपने कर्तव्यबोध से विमुख हो रहा है, वंचित हो रहा है, अलग हो रहा है, हट रहा है। रामलीला उसी कर्तव्यबोध को उन्हें याद दिलाती है। साथ भी दर्शाती है कि आप इस धरा पर कदम रखे हैं तो इस धरा पर आपके कुछ कर्तव्य हैं और उन कर्तव्यों का पालन करना आपका नैतिक दायित्व है। यदि आप उनका पालन करते हैं तो धर्म का पालन करते हैं अन्यथा धर्म का पालन नहीं करते हैं।

बुराई पर अच्छाई की जीत

मानव इतिहास के पन्नों में हम झाँके तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि मानव सभ्यता के शुरुआती दौर से ही अच्छाई और बुराई की अवधारणा प्रचलित रही है। यह अच्छाई और बुराई की अवधारणा अद्यतन भारतीय समाज ही नहीं, वरन् विश्व के अनेक समाजों में प्रचलित है। आज हम उत्तर आधुनिकता के दौर से गुजर रहे हैं। लेकिन हम देखें तो भारत ही नहीं विश्व की अधिकांश देश विभिन्न समस्याओं से ग्रसित है। आज विश्व के सामने सबसे बड़ी समस्या आतंकवाद की है। आज सिर्फ क्षणिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए इसको अंजाम दिया जा रहा है। बुराई का बोलबाला बड़े स्तर पर बढ़ा है। लेकिन कहीं न कहीं हम देखें तो पुनः रामलीला कर्तव्यबोध की ओर इंगित कराती है। हमें जीवन के मूल्यों के अनुरुप जीना चाहिए न कि क्षणिक भोग की पूर्ति के लिए। हमें ऐसे कार्य करना चाहिए जो मानवता के लिए कलंक से परे हो। इस संदर्भ में उत्तरादाताओं से साक्षात्कार लिए गए। साक्षात्कार से जो तथ्य प्राप्त हुए उसका तथ्यपरक विश्लेषण अधोलिखित सारणी से प्रस्तुत किया गया है :

Table-11

Response	Respondence	
	Frequency	Percentage
Yes	50	100
No	00	00
No Answer	00	00
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी के तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि समस्त उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि रामलीला बुराई पर अच्छाई की जीत का एक मंचन है। लेकिन इसे हम दूसरे रूप में देखें तो यह मंचन ही नहीं है, वरन् यह एक संदेश है। जो हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' के रूप में जीने के लिए प्रेरित करता है।

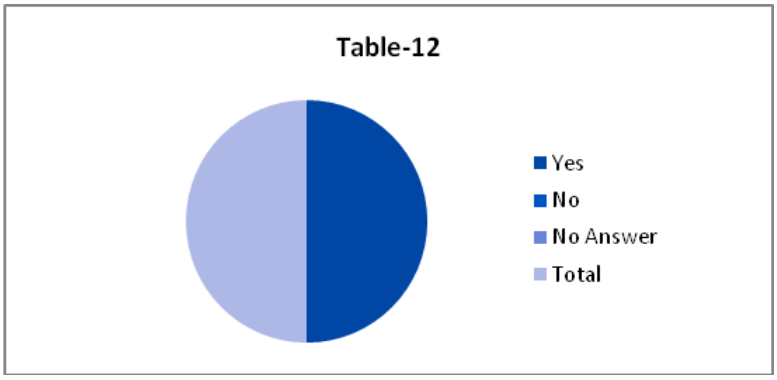
अतः हम कह सकते हैं, रामलीला एक मंचन ही नहीं, नाटक नहीं, है, वरन् एक विचार है, एक दर्शन है।

पवित्र मनोरंजन

आज उत्तर आधुनिकता के दौर में हम मनोरंजन की स्थिति का अवलोकन करें तो स्वस्थ एवं पवित्र मनोरंजन का अभाव दृष्टिगोचर होता है। आज शास्त्रीय संगीत की परंपरा पाश्चात्य संगीत के मुकाम तक पहुँच चुकी है। आज पूरे कपड़े पहने कलाकारों का मंचन अधनंगे जिस्म तक पहुँच चुका है। जिसके कारण हम अपने परिवार एवं बच्चों के साथ उन दृश्यों को देखने में झेंप महसूस होती है। इसी पक्षों के संदर्भ में उत्तरादाताओं से साक्षात्कार लिए गए। साक्षात्कार के बाद जो तथ्य प्राप्त हुए। उसका तथ्यपरक विश्लेषण किया गया।

Table-12

Response	Respondence	
	Frequency	**Percentage**
Yes	50	100
No	00	00
No Answer	00	00
Total	**50**	**100**



उपर्युक्त सारणी के तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि समस्त उत्तरदाताओं ने इस बात को स्वीकार किया है कि उत्तर आधुनिकता के दौर में रामलीला भारतीय जनमानस को स्वस्थ मनोरंजन के साथ–साथ एक पवित्र मनोरंजन भी प्रदान कर रहा है। इस तथ्य से यह अवधारणा निर्मित होती है कि जहाँ हम भद्दे, अश्लील मनोरंजनों के बीच से गुजर रहे हैं, वहीं हमें रामलीला स्वस्थ एवं पवित्र मनोरंजन प्रदान कर रहा है। साथ ही हमें सुख एवं शांति भी प्रदान कर रहा है।

निष्कर्ष

ईमाइल दुर्खीम धार्मिक विधि–विधानों को सामाजिक तथ्य मानता है। इस प्रकार देखा जाए तो काशी की रामलीला भी एक सामाजिक तथ्य है। काशी की रामलीला तोड़ने की बजाए जोड़ने की वैचारिकी पर आधारित है। साथ ही साथ **'सर्वधर्म समभाव'** की वैचारिकी को लेकर गतिमान है। काशी की रामलीला ने समाज में जातिगत एवं धर्मगत दूरियों को बड़े स्तर पर कम किया है एवं सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया है। इस प्रकार देखा जाए तो काशी की रामलीला के साथ–साथ धार्मिक एवं आध्यात्मिक माहत्य भी जुड़ा हुआ है। आज मानव सभ्यता उत्तर आधुनिकता के मुहान पर तो खड़ी है लेकिन कहीं न कहीं अवसाद, तनाव एवं असन्तोष की वैचारिकी से पोषित है। काशी की रामलीला में लोग सहभागी होकर लोग अवसाद, तनाव एवं असंतोष से मुक्ति पा रहे हैं। प्रसन्नचित रहकर जीवन को गति प्रदान कर रहे हैं। काशी की रामलीला के माध्यम से पर्यटन एवं रोजगार के अवसरों को बड़े स्तर पर बढ़ावा मिला है। काशी की रामलीला के सामाजिक माहत्य को कुछ ही पन्नों में सीमित करना अन्याय होगा लेकिन शोध–पत्र की सीमा को देखते हुए इसके माहत्य को सीमित कर प्रस्तुत शोध–पत्र को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ

1. श्रीमद्भगवतगीता, गीता प्रेस, गोरखपुर
2. मोतीचन्द्र, काशी का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2003
3. चतुर्वेदी, परशुराम : उत्तर भारत की संत परम्परा, लीडर प्रेस, प्रयाग, 1972
4. घुरिये, जी.एस. : इण्डियन साधुज, पापुलर बुक डिपो, बाम्बे, 1953
5. काणे, पी.वी. : हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र
6. इमाईल, दुर्खीम : द रुल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड्स, फ्री प्रेस, न्यूयार्क
7. गुगल से कुछ अंश उद्धृत।
8. https://hi.wikipedia.org/wiki/Ramleela
9. https://hi.wikipedia.org/wiki/globalization

●